औष्ण लेश्या से बचने का प्रयास करें : युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 28 जून।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि लेश्या नारक और देवों में भी होती है। एक लेश्या है औष्ण लेश्या जिसका रंग गहरा काला नयन तारा की तरह होता है और उसका रस कड़वा तूंबा या नीम के रस से भी अनंत गुना ज्यादा रस औष्ण लेश्या का होता है। औष्ण लेश्या की गंध बहुत ज्यादा बदबूदार होती है।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि औष्ण लेश्या का परिणाम जिस आदमी में होता है वह आदमी चोरी, हिंसा में रचापचा होगा, उसमें संयम नहीं होगा, करुणा की चेतना नहीं होती है, वह व्यक्ति परिग्रह में रहने वाला होता है, बिना सोचे विचारे काम करने वाला होता है, और जो व्यक्ति बिना सोचे विचार काम करता है तो वह अनर्थ भी कर देता है और आपदा में भी पड़ जाता है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि हर मनुश्य को यह चिंतन करना चाहिए कि कहीं उसमें औष्ण लेश्या तो नहीं है अगर है तो उससे बचने का प्रयास करना चाहिए और जीवन को अच्छा बनाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।